मंगलाचरण

तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्तिहराय नाथ
तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय।
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय
तुभ्यं नमो जिन भवोदधिशोषणाय।।

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै-
स्त्वं संश्रितो निरवकाशतयामुनीश।
दोषैरुपात्त - विविधाश्रयजातगर्वैः
स्वप्नान्तरेपि न कदाचिदपीक्षितोसि।।

नित नेम

नित्य नियम एवं स्वाध्याय

('नितनेम' ग्रन्थ से संकलित)

अनुक्रम	**पृष्ठ**
नवकार	155
तिक्खुत्तो पाठ	156
चत्तारि मंगल	157
चउविस्थव	157
तस्सउत्तरी	158
लोगस्स	158
सक्कथुई	160
नित्य चितारने के 14 नियम	161
चौदह नियम की ढाल	163
श्रावक के नित्य चिन्तवने के तीन मनोरथ	164
गीतक छन्द	173
बारह भावना	173
बारह भावना की ढाल	175
खमत खामणा की ढाल	177
पद्मावती आराधना	178
परमेष्ठी पंचक	185
अर्हत् पंचक	186
सिद्ध पंचक	186
आचार्य पंचक	187
उपाध्याय पंचक	188
मुनि पंचक	188
श्री पार्श्वजिन स्तवन	189
श्री वीर प्रार्थना	190
प्रार्थना	190
श्रद्धा सुमन	191
श्री पूज्य भीखणजी को स्मरण	192
भोर समय भजूँ भिक्षु गणि	198
श्री भिक्षु स्तुति	200

नवकार

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आयरियाणं
नमस्कार हुवो अरिहंत भगवंत ने, नमस्कार हुवो सिद्ध भगवंत ने, नमस्कार हुवो आचार्य देव ने।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्व साहूणं
नमस्कार हुवो उपाध्याय ने, नमस्कार हुवो लोक के सर्व साधुवों ने।

- अरिहंतों को नमस्कार करता हूं। सिद्धों को नमस्कार करता हूं। आचार्यों को नमस्कार करता हूं। उपाध्यायों को नमस्कार करता हूं। लोक में जितने साधु हैं उन सब को नमस्कार करता हूं।

इसमें पांच श्रेणी की आत्माओं को नमस्कार किया गया है। अरिहंत शब्द का अर्थ है - शत्रु को मारने वाला। आठ कर्मों के सिवाय जीव का कोई भी शत्रु नहीं है। इन आठ कर्मों में भी ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय और अन्तराय, ये चार कर्म बड़े प्रबल शत्रु हैं। ये चार कर्म जिनके समूल नष्ट हो जाते हैं एवं जो धर्म-मार्ग के प्रवर्त्तक होते हैं उनका नाम अरिहंत है।

जो आत्माएं त्याग-तपस्या रूप साधना द्वारा आठों ही कर्मों को नाश कर पूर्ण रूप से कर्मरहित हो जाते हैं, वे सिद्ध कहलाते हैं।

आचार्य शब्द से यहां धर्म के आचार्य ही लिये जाते हैं। धर्माचार्य वे होते हैं जो स्वयं साधुपन पालते हुए दूसरों को साधुपन पालने में सहायता देते हैं। धर्म-शासन के सब से मुख्य अधिकारी एवं संघ के स्वामी होते हैं। जैसे ६४९ साधु-साध्वी और लाखों श्रावक-श्राविकाओं के अधिनायक श्री श्री १००८ श्री श्री तुलसीरामजी स्वामी हैं (वर्तमान में आचार्यश्री महाप्रज्ञ हैं)

धार्मिक सिद्धान्तों को पढ़ने और पढ़ाने वाले उपाध्याय कहलाते हैं। आचार्य के द्वारा ये उपाध्याय के पद पर नियुक्त किये जाते हैं।

पांच समिति और तीन गुप्ति सहित पांच महाव्रतों को पालने वाले साधु कहलाते हैं। अरिहंत, आचार्य, उपाध्याय और साधु, ये सब ही समिति-गुप्ति सहित साधुपन पालते हैं– इसलिये इन्हें नमस्कार करने से लाभ होता है। सिद्ध बिल्कुल कर्मरहित शुद्ध आत्माएं हैं, अतएव ये नमस्कार करने योग्य हैं।अरिहंत, आचार्य एवं उपाध्याय, इनको साधु पद से पहले कहने का यह मतलब है कि इनमें उत्तर गुण विशेष होते हैं। आत्मा का उद्धार करने के लिये यह महान् मन्त्र है।

तिक्खुत्तो पाठ

(गुरु-वन्दन विधि)

तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं (करेमि) वंदामि

तीन बार दक्षिण पास प्रदक्षिणा (करूं छूं) स्तुति करूं छूं थी लेइनें

नमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं

नमस्कार करूं छूं सत्कार करूं छूं सन्मान करूं छूं। (गुरुदेव केहवा छै) कल्याणकारी

मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि मत्थएण वन्दामि।

मंगलकारी धर्मदेव ज्ञानवंत चित्त प्रसन्नकारी एहवा गुरु महाराज नी वलि मस्तके करी सेवा करूं छूं। वंदना करूं छूं।

पांच परमेष्ठियों को वन्दना करने की विधि इस पाठ में बतलाई गई है। वन्दना करने वाला वन्दना करते समय अपने दोनों हाथों को जोड़ कर तीन बार दांयी ओर से बांयी ओर प्रदक्षिणा करता हुआ कहता है - वन्दना करता हूं। नमस्कार करता हूं। सत्कार करता हूं। सम्मान करता हूं। आप कल्याणकारी हैं। मंगल करने वाले हैं। दैवत अर्थात् देवता के समान हैं। चैत्य–ज्ञानमय हैं अथवा चित्त को आल्हादित करने वाले हैं। मैं आपकी पर्युपासन अर्थात् सेवा करता हूं और मस्तक झुकाकर आपकी वन्दना करता हूं।

चत्तारि मंगलं

चत्तारि मंगलं - अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं केवलीपन्नत्तो धम्मो मंगलं।

चत्तारि लोगुत्तमा - अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवली पन्नत्तोधम्मो लोगुत्तमो।

चत्तारि सरणं पवज्जामि - अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि, केवली पन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि।

ए च्यारूं शरणा सगा, और न सगो कोय।
जे भवि प्राणी आदरै, अक्षय अमर पद होय।।

चउविस्थव

इरियावहियाए

इच्छामि पडिक्कमिउं इरियावहियाए, विराहणाए। गमणागमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा-उत्तिंग-पणम-दग-मट्टी-मकड़ा संताणा संकमणे। जे मे जीवा विराहिया, एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, बत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं।

मैं इच्छा करता हूं। निवृत्त होना (बचना) - मार्ग पर चलने आदि से होने वाली विराधना से। जाने आने में, किसी प्राणी को दबाकर, वनस्पति को दबाकर। ओस, कीड़ियों के बिल, पांच वर्ण की काई, पानी, मिट्टी, मकड़ी का जाला, आक्रमण हुआ हो, जो मेरे से जीवों की विराधना हुई हो, एक इन्द्रिय वाले, दो इन्द्रिय वाले, तीन इन्द्रिय वाले, चार इन्द्रिय वाले, पांच इन्द्रिय वाले, सन्मुख आते चोट पहुंचाई हो, धूल आदि से ढके हों, भूमि पर मसले हों, इकट्ठे किये हों, छुए हों, मृत-तुल्य किये हों, भयभीत किये हों, एक स्थान से दूसरे स्थान में अयत्ना से रखे हों। जीवन से रहित किये हों। उसके निष्फल हों मेरे पाप।

तस्सउत्तरी

तस्सउत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं विसोहिकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्टाए, ठामि काउस्सग्गं। अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाईएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंग संचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, णमुक्कारेणं नपारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

उसको श्रेष्ठ उत्कृष्ट बनाने के निमित्त। प्रायश्चित्त आलोचना करने के लिये। विशेष रूप से शुद्धि करने के लिये। तीन शल्य का त्याग करने के लिये। पाप-कर्मों का नाश करने के लिये, करता हूँ, कायोत्सर्ग (ध्यान); इन आगारों के बिना–उच्छ्वास, निःश्वास, खांसी, छींक, जम्भाई (बगासी), डकार, अधोवायु, चक्कर, पित्तविकार जनित मूर्च्छा, सूक्ष्म (थोड़ा) अंग संचार, सूक्ष्म श्लेष्म (कफ) संचार, सूक्ष्म दृष्टि संचार इत्यादि आगारों से भंग नहीं (विराधना नहीं) अखण्डित हो मेरा ध्यान (कायोत्सर्ग) जब तक अरिहन्त भगवन्त को नमस्कार करके न पारूं ध्यान (समाप्त करूं) तब तक काया को स्थिर रखकर, मौन रहकर, ध्यान धरकर, आत्मा को पाप कर्म से त्यागता हुआ छोड़ता हूं।

लोगस्स

लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मतित्थयरेजिणे,
अरिहंतेकित्तइस्सं, चउव्वीसंपि केवली।।१।।

उसभमजियं च वंदे, संभवमभिनंदणं च सुमइं च,
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे।।२।।

सुविहिं च पुष्फदंतं, सीयलसिज्जंसवासुपुज्जं च,
विमलमणंतं च जिणं धम्मं संतिं च वंदामि।।३।।

कुंथु अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि जिणं च,
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च।।४।।

एवं मए अभिथुआ, विहूयरयमला पहीणजरमरणा,
चउव्वीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु।।५।।

कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा,
आरुग्ग बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु।।६।।

चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा,
सागरवरगंभीरा; सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु।।७।।

लोक में उद्योत करने वाले, धर्मरूपी तीर्थ को स्थापित करने वाले, राग-द्वेष जीतने वाले, तीर्थंकरों का मैं स्तवन करता हूं। सम्भवनाथ को, अभिनन्दन स्वामी को, पुनः सुमतिनाथ को, पद्म प्रभु को, सुपार्श्वनाथ जिन को और चन्द्रप्रभु को वन्दना करता हूँ। सुविधिनाथ (दूसरा नाम) पुष्पदन्त को, शीतलनाथ को, श्रेयांसनाथ को, वासुपूज्य को और विमलनाथ को और अनन्तनाथ जिन को, धर्मनाथ को, शान्तिनाथ को वन्दना करता हूँ। कुंथुनाथ को, अरनाथ को, मल्लिनाथ को वन्दना करना हूँ। मुनिसुव्रत को, नमिनाथ जिन को पुनः वन्दना करता हूँ अरिष्टनेमि, पार्श्वनाथ तथा वर्द्धमान (महावीर भगवान्) को।

इस प्रकार मेरे द्वारा स्तवन किये गये, पाप रूप रज के मल से रहित। जरा - वृद्धावस्था और मरण से मुक्त। चौवीसों जिनवर तीर्थंकर देव मुझ पर प्रसन्न हों कीर्त्तन वन्दन और भाव से पूजन को प्राप्त हुए हैं। जो वे लोक के प्रधान सिद्ध हैं। आरोग्य-सम्यक्त्व का लाभ, समाधि का वर उत्तम-श्रेष्ठ देवें। चन्द्रों से विशेष निर्मल। सूर्यों से अधिक प्रकाश करने वाले। महासमुद्र के समान गम्भीर। सिद्ध भगवान मोक्ष मुझ को देवें।

सक्कथुई

णमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं, आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं, पुरिसुतमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुण्डरीयाणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं, लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहियाणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोयगराणं-अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं, जीवदयाणं, धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवर-चाउरंत-चक्कवट्टीणं, दीवोत्ताणं, सरणगइपइट्ठा, अप्पडिहयवर-नाणदंसण-धराणं, विअट्टछउम्माणं, जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं, तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोयगाणं; सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिव-मयल मरुअ-मणंतमक्खय-मव्वाबाह-मपुणराविति सिद्धिगइनामधेयं, ठाणं (संपाविउकामाणं) संपत्ताणं, नमो जिणाणं जियभयाणं।

नमस्कार हो, अरिहन्त भगवन् को, वे भगवान कैसे हैं-धर्म के आदि कर्त्ता, धर्म-तीर्थ की स्थापना करने वाले। अपने आप बोध को प्राप्त हुये, पुरुषों में उत्तम, पुरुषों में सिंह के समान, पुरुषों में पुण्डरीक कमल के समान निर्लेप। पुरुषों में प्रधान गंधहस्ती के समान, लोक में उत्तम, लोक के नाथ, लोक के हितकारी, लोक में प्रदीप के समान, लोक में उद्योत करने वाले। अभय दान देने वाले। ज्ञान रूप नेत्रों को देने वाले। मोक्ष मार्ग के देने वाले। सर्व जीवों के शरण-भूत। बोध बीज के देने वाले (संयमरूपी) जीवन के दाता। धर्म के दाता। धर्मोपदेशक, धर्म के नायक। धर्म रूप रथ के सारथी। धर्म में प्रधान और चार गति का अन्त करने वाले, अतएव चक्रवर्ती के समान। संसार समुद्र में द्वीप के समान और रक्षक। शरणागतों की वत्सलता करने वाले। अप्रतिहत, ऐसे श्रेष्ठ ज्ञान दर्शन के धरने वाले। छद्म अर्थात् घातिक कर्मों से रहित। राग द्वेष को जीतने वाले। संसार समुद्र से स्वयं तैरते हुए, दूसरों को तारने वाले। आप बुद्ध हैं, दूसरों को बोध देने वाले। स्वयं कर्मों से मुक्त औरों को मुक्त करने वाले। सर्वज्ञ सर्वदर्शी कल्याणरूप स्थिर। रोग से रहित। अनन्त-अक्षय। बाधा पीड़ा रहित। पुनर्जन्म रहित। (ऐसे) सिद्धिगति, नामक स्थान को प्राप्त हुये हैं। नमस्कार हो जिन भगवान को।

नित्य चितारने के १४ नियम

१. सचित्त - माटी, पाणी, अग्नि, वनस्पति, फल, फूल, छाल्य, काष्ठ, मूल, पत्र, बीज, त्वचा तथा अग्नि प्रमुख अनेरुं शस्त्र लाग्युं न होय ते, इलायची, लोंग, बादाम इत्यादिक सचित्तनुं वजन धारवुं।

२. द्रव्य - धातु वस्तुनी शली तथा अपनी आँगली के सिवाय जो वस्तु मुख्य में दीजै सो सर्व द्रव्य की गिनती में आवै। नामान्तर, स्वादान्तर, स्वरूपान्तर, परिणामान्तर, द्रव्यांतर होने से द्रव्यांतर होई। जिम गेहूँ एक द्रव्य किन्तु उसकी रोटी, फीणा रोटर, बेढवा रोटी और बाटी यह सर्व द्रव्य जूदा कहिये। इसी प्रकारे भात, दाल, रोटी, मांड़ियो, पलेब, तरकारी, पापड़, खीचिया, लड्डू, फीणी, घेवर, खाजा इत्यादि। यहां उत्कृष्ट द्रव्य को नाम लेई राखै तो एक ही द्रव्य कहिये। जैसे - मेवे की खिचड़ी अनेक द्रव्य निष्पन्न है किन्तु नाम लेके रखने से एक ही द्रव्य है।

३. विगई - दूध, दही, घी, गोल (चीनी, गुड़), तेल तथा जे चीज कढ़ाइ मां तलायवे, तेहनी गणत्री धारवी।

४. पन्नही - पगरखां (जूता) अथवा जोड़ा तथा मोजा, चट्टी, खड़ाऊ (जो पांव में पहना जाय)।

५. तंबोल - पान, सुपारी, इलायची, लवंग, चूरण, गोली, खाटो इत्यादिकनुं वजन धारवुं।

६. वत्थ - वस्त्र (रेशमी, सूती, शण तथा ऊनना), पगड़ी, टोपी, कोटा, जाकीट, गंजी, चोली, कमीज, धोती, पायजामा, दुपट्टा, चद्दर, शाल, अंगोछा और रूमाल। (मर्दाना और जनाना कपड़ा) वगैरहनी गणत्री धारवी।

७. **कुसुमेसु** - जे वस्तु नाके सुंघवामां आवै तेहना तोलनुं प्रमाण करवुं। उदाहरण - फूल, फूल की चीजों जैसे-माला, हार, गजरा, तुर्रा, सेहरा, पंखा, सझ्या (शैया), इत्र, तैल, सेण्ट, घी, छींकणी वगैरहनों नियम करवो।

८. **वाहण** - चरतुं, फरतुं, तरतं, उदाहरण- हाथी, घोड़ा, ऊंट, इक्का गाड़ी, रथ, पालकी, रिक्सो, रेल, ट्राम, साईकल, मोटर, मोटर साईकल, हवाई जहाज, नाव, अने बोट वगैरह नों निमय करवो।

९. **सयन** - सूवानी सझ्या (शैया), पाट, पाटला, बिछाना, कुरसी, गद्दी, पलंग, छपर-खाट, मेज, तखत, सुखासन, सतरंजी, चौकी, जाजम, वगैरह नी गणत्री धारवी।

१०. **विलेवण** - जे वस्तु शरीरे चोपड़वा मां आवै तेहना वजननुं परिमाण, उदाहरण - सूखड़ चन्दन, केशर, तेल, सोडो, मसालो, कपूर, कस्तूरी, रोली, काजल, सुरमा वगैरह।

११. **बंभ** - ब्रह्मचर्यनो नियम करवो - स्त्री पुरुष ने सूई डोरे के न्याय तथा बाह्य विनोद की गणत्री धारवी, श्रावक परदारा त्याग और स्वदारा से ही संतोष राखै, उसका भी परिमाण करै, अन्तराय देणी नहीं, संयोग मेलणो नहीं।

१२. **दिशि** - पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, नीचुं अने ऊंचुं ए छः दिशाएं जावा आवाना कोसनुं परिमाण धारवुं, चिट्ठी, तार, आदमी, माल, इतने कोस, भेजना तथा मंगाना।

१३. **नहाण** - सर्व अंगे नहावुं तेहनी गणत्री तथा पाणीनो वजन धारवुं।

१४. **भत्तेसु** - भोजन तथा पाणी वापरवुं तेहना वजननुँ परिमाण करवुँ - इतना घर उपरान्त जीमणो तथा पाणी पीणो नहीं।

चवदै नियम की ढाल

रचयिता - ऋषिराजजी

सचित[१] द्रव्य[२] विगय[३] परिहार, पन्नही[४] तंबोल[५] वस्त्र[६] सुविचार।
फूल[७] बाहन[८] सयन[९] सुखकार, विलेपन[१०] ब्रह्मचर्य[११] धार।।
सोई रे सयाणा नेम चितारै, श्रावक ते आतम निस्तारै।।१।।
दिशि[१२] तणो करै परिमाण, स्नान[१३] तणी मर्यादा आण।
भात[१४] तणो नियम बले जाण, ए चवदै नियम सीखै गुणखाण।।२।।
पृथ्वी अप तेऊ बले वाय, वनस्पति त्रस ए छहुं काय।
कूटण पीटण छेदन करै काय, परिमाण करे मन समता लाय।।३।।
असनादिक ना द्रव्य अनेक, परिमाण करै मन समता छेक।
दूध दही घृत ने मिष्टान, तैल बले विविध पकवान।।४।।
मद्य मांस अभक्ष कहाय, श्रावक तो नहीं सेवै ताय।
माखण मधु नो करै परिमाण, श्रावक ते कहिये गुण खाण।।५।।
विगय तणो करै पचखाण, समता बसावै दिल मां आण।
चर्म तणी तथा वस्त्र नी जोय, पन्नी पावड़ियादिक अवलोय।।६।।
पान सुपारी एलायची पेख, वस्त्र वासना द्रव्य अनेक।
चित में समता धारै चंग, तांबुल नेम धारै मन रंग।।७।।
सूत ऊनुँ रेशम नो जोय, वस्त्र अभिग्रह धारै सोय।
फूलादिक सुगन्ध अपार, सूंघण मेरा करै सुखसार।।८।।
अश्व रथादिक नी असवारी, बाहनाभिग्रह करै मन बारी।
पल्यंकादिक सयण सुजान, बैसण सोवण विध परिमाण।।९।।
केशर चन्दण ने घणसार, विलेपन मर्याद विचार।
देव मनुष्य तिर्यंच ना जोय, भोग छांड़ी ब्रह्मचारी होय।।१०।।

*देशी : सोई रे सयाणा अवसर साधै०

पूरव पश्चिम उत्तर दक्षिण, ऊर्ध्व धारै विचक्षण।
भ्रमण तणो मन मेटी भ्रम, पाप सेवन त्यागै दिल नर्म।।११।।

एक दोय उपरान्त उदार, अंग पखालण करै परिहार।
हस्त पाद घोवण विध जोय, ते पिण त्यागै समता वसोय।।१२।।

अशनादिक चिहुं विधि आहार, त्यांमें एक बे आदि त्यागै सार।
तथा तोल मान करै जेह, भात गिनत संख्या धारेह।।१३।।

एह चवदे नेम कहीजे, त्यांमे लेन बेचन बहु काम गिणिजै।
खावण पीवण मर्यादा करीजे, करण जोग दिल मांह धरीजे।।१४।।

अनन्त काल भव भ्रमण मिटावै, सुख सम्पत्ति आनन्द उपावै।
चवदै नेम हृदय जे ध्यावै, नरक निगोद मांहे नहीं जावै।।१५।।

दुर्लभ लाधो मनुष्य जमारो, आर्य क्षेत्र सुकुल अवतारो।
आण अखंडित सूं आराधो, तो शिवरमणि ना सुख साधो।।१६।।

अंग अश्व ग्रह चंद कहावै, भाद्र कृष्ण पंचम दरशावै।
श्री कालू करुणा सुपसायो, ऋषि राम आनन्द निधि पायो।।१७।।

अल्प मात्र विस्तार ए कीधो, बुद्धिवन्त जाण लेवै बहु विधो।
गंगापुर श्रावक गुण गाया, ढाल जोड़ी ए युक्ति लगाया।।१८।।

श्रावक के नित्य चिन्तवने के तीन मनोरथ

(रचयिता - श्रावक गुलाबचन्दजी लूणिया)

दोहा

प्रणमूं अरिहन्त सिद्ध बलि, आचारज उवज्झाय।
साधु सकल पद वन्दतां, आनन्द मंगल थाय।।१।।

श्रीजिनवर स्वमुख थकी, तीजा अंग मझार।
तीजै ठाणै भाखिया, तीन मनोरथ सार।।२।।

श्रावक-व्रत धारक जिके, चितवन्तां सुखकार।
कर्म महा अघ निरजरै, पामै भवनो पार।।३।।

ढाल पहली

(देशी : भाखै कृष्ण मुरार, धिक्कार संसार नें)

प्रथम मनोरथ मांहि, श्रावक इम चिन्तवै।
ये आरम्भ दुःखदाय, परिग्रह थी हुवै।।१।।

महा अनरथ नुं मूल, परिग्रह जिन कह्यो।
किंचित् ने बलि स्थूल, पंच भेदे ग्रह्यो।।२।।

खेतु वथु दिक जान, हरिण्य सुवर्ण सही।
कुम्भिधातु धन धान, द्विपद चौपद मही।।३।।

यथा शक्ति परिमाण, त्याग उपरांत ही।
पंचम व्रत गुण खाण, करण योगवन्त ही।।४।।

जे राख्यो आगार, ते अव्रत द्वार है।
देयां देवायां तार, पाप संचार है।।५।।

सचित अचित जे वस्तु, अहार नें पाणियां।
सावद्य कार्य समस्त, भोगायां भलो जाणियां।।६।।

हिन्सा हुवै षटकाय, तणी गृहवास में।
जिन मुनि आण न ताय, धर्म नहीं जास में।।७।।

आरम्भ परिग्रह एह, कुगति दातार है।
क्रोध मान माया लोभ, तणुं करण हार है।।८।।

संयम समकित कल्प-तरु, नो भंजनुँ।
महा मन्द बुद्धि अज्ञान, तणो मन रंजनुं।।६।।

माठी लेश्या होय, आर्त्त रौद्र ध्यान में।
न्याय न सूझै कोय, लिप्त धनवान नें।।१०।।

सुमति शुचि सौभाग्य, विनाशण एह ही।
जन्म मरण भय अथाग, हुवै परिग्रह थकी।।११।।

कड़वा कर्म विपाक, तणो हेतु सधै।
सींचै तृष्णा-बेल, विषै इन्द्री बधै।।१२।।

दारुण, कर्कश दुःख, वेदन असराल ही।
कूड़ कपट परपंच, करै विकराल ही।।१३।।

इण सरीखो नहीं मोह-पाश, प्रतिबन्ध है।
स्नेह राग करि जास, मूर्च्छा अन्ध है।।१४।।

दान कुपात्र दुरगति दायक जिन कहै।
परिग्रह ही देवाय, तेह थी शिव किम लहै।।१५।।

घणा काल री प्रीत, विनाशै स्यात में।
कुल-मर्याद नी रीत, छांड़ै बलि न्यात में।।१६।।

एहवी आरम्भ परिग्रह, जे दिन त्यागस्यूं।
थासे ते दिन धन्य, अंतस वैराग सूं।।१७।।

बाह्य अभ्यन्तर ग्रन्थ, तणी मूर्च्छा तजूँ।
प्रगटै भल रवि तेह, नाम प्रभू नुं भजूँ।।१८।।

दोहा

दूजो मनोरथ चिन्तवै, श्रावक जे व्रतधार।
तन धन जोबन कारमुं, विणशंताँ नहीं बार।।१।।

मात पिता बंधव त्रिया, पुत्रादिक परिवार।
स्वारथ लग सहु को सगा, सही संसार असार।।२।।

गृहवा से हिवड़ाँ बसूं, चारित मोह जे कर्म।
क्षय उपशमियाँ थी कदा, लेस्यूं चारित्र धर्म।।३।।

ढाल दूसरी

(देशी : वैरागे मन बालियो तथा कृष्ण भावै रूड़ी भावना)

धन धन संयम धर मुनि, त्याग्यो ते संसार।
पंच महाव्रत धारका, पालै पंच आचार।।
धन धन सेयत धर मुनि।।१।।

श्री जिन आज्ञा बाहिरो, सावद्य कारज ताय।
नहीं आदेश दे तेहनुं, मौन धारै मुनिराय।।
धन धन सेयत धर मुनि।।२।।

दश विध यति धर्म धारियो, यति नाम कहिवाय।
जीत्या विषय इन्द्रियाँ तणी, द्वितीय अर्थ सुखदाय।।
धन धन सेयत धर मुनि।।३।।

दोष वयालिस टाल के, ले भिक्षु शुद्ध आहार।
कह्यो भिक्षु ए गुण थकी, भेदै कर्म अपार।।
धन धन सेयत धर मुनि।।४।।

साधै शिव-मग साधना, साधु महा गुण खान।
द्वादश भेदे तप करै, तपसी नाम बखान।।
धन धन सेयत धर मुनि।।५।।

मत हणो मत हणो जीवने, दे उपदेश महन्त।
माहण महा गुण आगला, शान्ति-भाव ते सन्त।।
धन धन सेयत धर मुनि।।६।।

कल्याणकारी ते भणी, कल्याणिक मुनि नाम।
विघ्नोपशमकारी पणे, मंगलीक अभिराम।।
धन धन सेयत धर मुनि।।७।।

धर्मोपदेशक गुण थकी, पूजनीक तसु पाय।
तीन लोक ना अधिपति, धर्म-देव मुनिराय।।
धन धन सेयत धर मुनि।।८।।

चित्त प्रसन्न दरशन तसु, चैत्य सदा सुखकार।
नव विध पालै ब्रह्म किया, बलिहारी ब्रह्मचार।।
धन धन सेयत धर मुनि।।९।।

जन्म सफल कियो महाऋषि, षट् काया प्रतिपाल।
भव सागर में डूबता, जहाज समान दयाल।।
धन धन सेयत धर मुनि।।१०।।

स्नेह पाश नहिं केह सूँ, संवेगी वैराग।
ग्रन्थी त्याग निग्रन्थ है, महकत सुयश अथाग।।
धन धन सेयत धर मुनि।।११।।

शुद्ध क्रिया में श्रम करै, श्रमण कहीजै तेह।
योग विमल साधै सदा, तिण सूं योगी कहेह।।
धन धन सेयत धर मुनि।।१२।।

आर्जव-आर्जव भाव थी, मार्दव-मार्दव भाव।
शौच शुची क्रिया भली, करता मुक्ति उपाय।।
धन धन सेयत धर मुनि।।१३।।

धर्म विणज विणजै सदा, सार्थवाह सुविचार।
कर्म-कटक दल जीतवा, सेनापति व्रतधार।।
धन धन सेयत धर मुनि।।१४।।

मन वच काया गोपवै, सुमति पंच प्रकार।
इन्द्रादिक स्वमुख करी, न लहै गुण नो पार।।
धन धन सेयत धर मुनि।।१५।।

सबला इकवीस दोष जे, टालै ते भल रीत।
तीन तीस आसातना, करै नहीं सुविनीत।।
धन धन सेयत धर मुनि।।१६।।

आचारज उवज्झायरी, व्यावच से धर प्यार।
तपसी लघु पुन ग्लान नें, वस्त्रादिक दे आहार।।
धन धन सेयत धर मुनि।।१७।।

भव भ्रम भमता जीव नें, तारण तरण समान।
गहन कन्तार संसार थी, ल्यावै शिव मन स्थान।।
धन धन सेयत धर मुनि।।१८।।

चन्द्र तणी पर निरमला, तम मिथ्या मति नाश।
अडिग अमर गिर सारीषा, रविवत् ज्ञान प्रकाश।।
धन धन सेयत धर मुनि।।१९।।

जिन भाषित दाखित सदा, साधु श्रावकनुं धर्म।
अव्रत विष सम लेखवी, पालै क्रिया पर्म।।
धन धन सेयत धर मुनि।।२०।।

आतम भावे विचरता, ध्यावै निज ध्येय ध्यान।
अकर्ता पद परिणमै, धन्य धन्य ते गुणवान।।
धन धन सेयत धर मुनि।।२१।।

निन्दित वन्दित सम पणै, राग द्वेष नहिं होय।
जश अपयश जीवण मरण में, हर्ष शोग नहिं कोय।।
धन धन सेयत धर मुनि।।२२।।

सफल जमारो धन्य घड़ी, भावे जागृत जेह।
अप्रतिबन्ध वायु परै, तजी कुटुम्ब थी नेह।।
धन धन सेयत धर मुनि।।२३।।

चारित मोह क्षयोपशम्याँ, हूँ एहवो व्रत धार।
थाँस्यूं ते दिन धन्य घड़ी, आनन्द हर्ष अपार।।
धन धन सेयत धर मुनि।।३४।।

दोहा

तीजो मनोरथ चिन्तवै, मन में श्रावक एम।
संयम ग्रही शुभ भाव से, लिया निभाऊँ नेम।।१।।

ए संसार अगाध में, भमियो काल अनन्त।
बहु षटरस भोजन किया, समता नहिं उपजंत।।२।।

मरण सहित अणशण करूँ, पादोपगमन संथार।
अवसर मरण तणै बलि, होयजो शरणा च्यार।।३।।

ढाल तीसरी

(देशी : हूं तुझ आगल स्यूं कहूँ कन्हैया)

शुभाशुभ पुद्गल फरशिया। गुणवन्ता।
षटत्रण दिशनूं आहार हो। गुणवन्ता श्रावक।

दुगन्ध सुगंध फर्श आठ ही। गु०।
पंच बरण रस धार हो। गु० श्रावक।
भावै एहवी भावना गुणवन्ता। गु०श्रा०।।१।।

मोटी माया मोहणी। गु०।
खोटी पद्गल पर्याय हो। गु०श्रा०।
उदय थयां दुख नीपजै। गु०।
वेदै चेतन राय हो। गु०श्रा०। भावै०।।२।।

प्रकृति अठवीसे करी। गु०।
क्रोध मान माया लोभ हो। गु०।
चिहुं-चिहुं भेदे संचरै। गु०।
पामै चेतन क्षोभ हो। गु०श्रा०। भावै०।।३।।

हास्य रतारत भय बलि। गु०।
शोग दुगंछा थाय हो। गु०श्रा०।
स्त्री पुरुष नपुँसक तिहुं। गु०।
मोह चारित कहिवाय हो। गु०श्रा०। भावै०।।४।।

दरशन मोह उदय थकी।गु०।
मिच्छत समकित जान हो। गु०श्रा०।
मिश्र मोहनी ए तिहुं। गु०।
दाबै निज गुण खान हो। गु०श्रा०। भावै०।।५।।

असाता वेदनोदय। गु०।
भूख तृषादि पीडंत हो। गु०श्रा०।
लाभ भोगंतर क्षयोपशम्याँ। गु०।
भोग शक्ति पावंत हो। गु०श्रा०। भावै०।।६।।

नाम उदय थी सहु मिलै। गु०।
गमता गणगमता भोग हो। गु०श्रा०।।
विविध प्रकारे भोगवै। गु०।
शरीरादि रोग्य अरोग्य हो। गु०श्रा०। भावै।।७।।

बार अनन्त सुख दुःख सह्या। गु०।
भव-भव भमियो जीव हो। गु०श्रा०।
स्वर्ग नरक फुन मनुष्य में। गु०।
तिर्यंच गति में अतीव हो। गु०श्रा०। भावै०।।८।।

अनन्त मेरु सम आहारिया। गु०।
अनन्त पुद्गल पर्याय हो। गु०श्रा०।
कई इक लोकाकाश में। गु०।
बार अनन्त कहिवाय हो। गु०श्रा०। भावै०।।६।।

भोजन किया इण आत्मा। गु०।
बहु मूल्यनो तंत हो। गु०श्रा०।
इम जाणी अणसण करै। गु०।
छेहले अवसर संत हो। गु०श्रा०। भावै०।।१०।।

अष्टादश जे पाप ना। गु०।
थानक ग्रते आलोय हो। गु०श्रा०।
निन्दै दुकृत जे थया। गु०।
शल्य रहित सहुकोय हो। गु०श्रा०। भावै०।।११।।

लाख चौरासी योनि नें। गु०।
बारम्बार खमाय हो। गु०श्रा०।
राग द्वेष तज सहु थकी। गु०।
हर्ष शोग नहीं कांय हो। गु०श्रा०। भावै०।।१२।।

च्यार प्रकारे आहार जे। गु०।
त्यागै ममता रहित हो। गु०श्रा०।
पंच आस्रव पचखी करी। गु०।
पादोपगमन सहित हो। गु०श्रा०। भावै०।।१३।।

जंगम स्थावर सम्पत्ति। गु०।
द्विपद चौपद वोसराय हो। गु०श्रा०।

अरिहन्त सिद्ध साधु ध्यान थी। गु०।
शिवगति नेड़ी थाय हो। गु०श्रा०। भावै०।।१४।।

इहलोक परलोक नी। गु०।
जीवितव्य मरण सधीर हो। गु०श्रा०।
आशा नहीं काम भोग री। गु०।
सम परिणाम सुथिर हो। गु०श्रा०। भावै०।।१५।।

अन्त समा में एहवो। गु०।
पण्डित मरण जे थाय हो। गु०श्रा०।
मनरा मनोरथ जद फलै। गु०।
आनन्द हर्ष सवाय हो। गु०श्रा०। भावै०।।१६।।

धन्य दिवस धन्य जे घड़ी। गु०।
आराधक पद पाय हो। गु०श्रा०।
अल्प भवाँ रे आंतरै। गु०।
सिद्ध गति में ते जाय हो। गु०श्रा०। भावै०।।१७।।

श्री भिक्षु गुण आगला। गु०।
प्रकट बतायो राह हो। गु०श्रा०।
जिन धर्म जिन आज्ञा माहिं। गु०।
आज्ञा बाहेर नांहि हो। गु०श्रा०। भावै०।।१८।।

भारीमाल गणि तस पटे। गु०।
तृतीय तख्त ऋषिराय हो। गु०श्रा०।
जय वर पट तूर्य सूर्य सा। गु०।
पंचम मघवा कहवाय हो। गु०श्रा०। भावै०।।१९।।

माणक माणक सारिखा। गु०।
वर्तमान गच्छ स्थम्भ हो। गु०श्रा०।
नामें डाल शशि भला। गु०।
भविजन निरख अचम्भ हो। गु०श्रा०। भावै०।।२०।।

उगणीसै पैंसठ बलि। गु०।
मृगशर सित पख पेखहो। गु०श्रा०।
श्रावक गुलाब कहै भलैं। गु०।
आनन्द हर्ष विशेष हो। गु०श्रा०। भावै।।२१।।

गीतक छन्द

इम त्रण मनोरथ चिन्तवै, जे भविक नित प्रते जाण ही।
अघ राशि कर्म विनाश थावै, पावै पद निर्वाण ही।।
गणी डालचन्द जिनन्द सम, मम गुरु तास पसाय ही।
कहै श्रमणोपासक गुलाबचन्द, आनन्द हर्ष अथाय ही।।१।।

बारह भावना

१. अनित्य भावना

राजा राणा छत्रपति, हाथिन के असवार।
मरना सब को एक दिन, अपनी-अपनी बार।।

२. अशरण भावना

दल बल देवी देवता, मात पिता परिवार।
मरती बिरियाँ जीव को, कोई न राखनहार।।

३. संसार भावना

दाम बिना निर्धन दुखी, तृष्णा वश धनवान।
कहूं न सुख संसार में, सब जग देख्यो छान।।

४. एकत्व भावना

आप अकेला अवतरै, मरे अकेला होय।
यों कबहूँ या जीव को, साथी सगो न कोय।।

५. अन्यत्व भावना

जहां देह अपनी नहीं, तहां न अपना कोय।
घर सम्पत्ति पर प्रकट ये, पर हैं परिजन लोय।।

६. अशुचि भावना

दीपै चाम चादर मढ़ी, हाड पींजरा देह।
भीतर या सम जगत में, और नहीं घिन गेह।।

७. आस्रव भावना

जगवासी घूमें सदा, मोह नींद के जोर।
सब लूटै, नहीं दीसता, कर्मचोर चहुँ ओर।।

८. संवर भावना

मोह नींद जग उपशमै, सतगुरु देय जगाय।
कर्म चोर आवत रुकै, तब कुछ बने उपाय।।

९. निर्जरा भावना

ज्ञान दीप तप तेल भर, घर शोधे-भ्रम छोर।
या विधि बिन निकसै नहीं, पैठे पूरब चोर।।

पंच महाव्रत संचरण, समिति पंच प्रकार।
प्रबल पंच इन्द्रिय विजय, धार निर्जरा सार।।

१०. लोक भावना

चौदह रज्जू उतंग नभ, लोक पुरुष संठान।
तामें जीव अनादि तैं, भरमत है बिन ज्ञान।।

११. बोधि-दुर्लभ भावना

धन जन कंचन राज सुख, सबहिं सुलभ कर जान।
दुर्लभ है संसार में, एक यथारथ ज्ञान।।

१२. धर्म भावना

आप अकेला अवतरै, मरे अकेला होय।
यों कबहूँ या जीव को, साथी सगो न कोय।।

बारह भावना की ढाल

(देशी : नमिनाथ अनाथां रो नाथो रे०)

आदिनाथ अरिहन्त आख्यातो रे।
बड़ो पुत्र भरत विख्यातो रे।
अनित्य भावना भाई साख्यातो,
महा मुनि मोटका नित्य वन्दो रे।।महा०१।।

गढ़ मढ़ मंदिर पोल प्रकारी रे।
नर इन्द्र सुरेन्द्र सारी रे।।
नित्य नहीं सहु नर नारी।।महा०२।।

अशरण भावना ऋषि अनाथी रे।
एक जिन धर्म जीव रो साथी रे।।
संयम पाली मुगत संघाती।।महा०।।३।।

संसार भावना शालिभद्र भाई रे।
अधिक वैराग मन आई रे।।
संयम लेइ सर्वार्थ सिद्ध पाई।।महा०।।४।।

नमिराय ऋषेश्वर जाणी रे।
एकत्व भावना उर आणी रे।।
मुनि जाय पहुंता निरवाणी।।महा०।।५।।

पंखीनी पर भावना भल भाई रे।
कुंवर मृघापुत्र उर आई रे।।
संयम लियो परिवार समझाई।।महा०।।६।।

चौथो चक्री सनत कुमारो रे।
अशुच भावना भाई अपारो रे।।
राज छांड़ि संयम व्रत धारो।।महा०।।७।।

समुद्रपाल एलाची दोई रे।
आस्रव भावना जोई रे।।
दोनूं मुगत गया कर्म खोई।।महा०।।८।।

बागणी केशी हरकेशी रे।
संवर भावना उर बेसी रे।।
हरकेशी मुगत बरेसी।।महा०।।९।।

निर्मल निर्जरा भावना भाई रे।
छव मासे कर्म खपाई रे।।
अरजुन माली अनन्त सुख पाई।।महा०।।१०।।

लोक सार भावना लीव लागी रे।
शिवराज ऋषेश्वर जागी रे।।
प्रभु पे संयम लेई वैरागी।।महा०।।११।।

अठाणवै पुत्र आया रे।
आदेश्वरजी समझाया रे।।
बोधि दुर्लभ भावना भाया।।महा०।।१२।।

धर्मरुची ऋषिरायो रे।
धर्म भावना ते भायो रे।।
दया पाली सर्वार्थ सिद्ध पायो।।महा०।।१३।।

ए बारह भावना जे भावै रे।
ते नर महा सुख पावै रे।।
बेगो मुगत नगर में जावै।।महा०।।१४।।

संवत् त्रेणवे बरस अठारो रे।
काती बद नवमी सोमवारो रे।।
जोड़ कीधी मालवा गांव मझारो।।महा०।।१५।।

खमतखामना की ढाल

रचयिता—श्रीमद्जयाचार्य

इम व्रत उच्चरिवा तणो, आख्यो दूजो द्वार।
तृतीय द्वार कहिये हिवे, खमायवूं तज खार।।

ढाल

(देशी : सीता आवै रे धर राग)

सुगुणा! खमाविये तज खार
सप्त लक्ष जे जाति पृथ्वी नी, सप्त लक्ष अपकाय।
इत्यादिक चउरासी लक्ष जे, जीवा योनि खमाय।।१।।

गण में सन्त सती गुणवन्ता, सगलाँ भणी खमाय।
निज आतम प्रति नरम करी नै, मच्छर भाव मिटाय।।२।।

किणहिक सन्त सती सूं आया, कलुष भाव जो ताम।
कठण वचन तसु कह्या हुवै तो, खामै ले-ले नाम।।३।।

इमहिज श्रावक अनें श्राविका, सगलाँ भणी खमाय।
कलुष भाव करि कटु वच आख्या, तो नाम लेई ने ताय।।४।।

द्रव्यलिंगी वा अन्यदर्शणी, खामें सरल पणेह।
क्रोधादिक करी कटु वच आख्या, तो नाम लेई पभणेह।।५।।

बड़ा सन्त नी करी आसातन, त्रिहुँ जोगे करी ताम।
सर्व खमावै उज्जल भावे, लेई जूजुआ नाम।।६।।

चिहुँ तीरथ अथवा अन्य जन प्रति, राग द्वेष दिल आण।
वचन कह्या हुवै तास खमावूं, इम कहै मुनि सुजाण।।७।।

रेकारा तूंकारा किण नै, राग द्वेष वश दीध।
तेह थी खमत खामणा म्हांरा, एम वदै सुप्रसीध।।८।।

कठिन सीख दीधी हुवै किण नें, लहर वैर मन आण।
खतम खामण म्हांरा तेह थी, वदै नरम इम वाण।।९।।

महाउपकारी गणपति भारी, समकित चरण दातार।
बारम्बार खमावै त्यांनै, अविनय कियो किंवार।।१०।।

स्वारथ अणपूगाँ गणिपति ना, बोल्या अवरणवाद।
ते पिण बारम्बार खमावै, मेटी मन असमाध।।११।।

विनयवन्त गणपति ना त्यांथी, धर्या कलुष परिणाम।
बारम्बार खमावै तेह नै, लेई जूजुआ नाम।।१२।।

च्यार तीरथ अथवा अन्य जन थी, मेटी मच्छर भाव।
इह विधि खमतखामणा करतो, ते मुनि तरणी न्याव।।१३।।

परम नरम इम आतम करवी, धरवी समता सार।
ए विधि वारूं रीत बताई, तीजा द्वार मझार।।१४।।

पद्मावती आराधना

(लय : रे जीवा जिनधर्म कीजिए)

हिवै राणी पद्मावती, जीवरास खमावै।
जाणपणो जग दोहिलो, इण बेलाँ आवै।।
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं।।१।।

अरिहन्तनी साख, जे मैं जीव विराधिया।
चौरासी लाख, ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं।।२।।

सात लाख तेउ काय ना, साते अपकाय।
सात लाख अप काय ना, साते बली वाय।।३।।

दश प्रत्येक वनस्पति, चवदे साधारण धार।
बी ती चउरिंद्री जीवना, बे बे लाख विचार।।४।।

देवता तिर्यंच नारकी, चार-चार प्रकाशी।
चउदे लाख मनुष्य ना, ए लाख चौरासी।।५।।

इण भवै परभवे सेविया, जे मैं पाप अठार।
त्रिविध त्रिविध करी परिहरूं, दुर्गति ना दातार।।६।।

हिंसा कीधी जीवनी, बोल्या मृषावाद।
दोष अदत्ता दान ना, मैथुन ने उन्माद।।७।।
परिग्रह मेल्यो कारमो, कीधो क्रोध विशेष।
मान माया लोभ मैं किया, बली राग ने द्वेष।।८।।
कलह करी जीव दुहव्या, दीधा कूड़ा कलंक।
निन्दा कीधी पारकी, रति अरति निशंक।।९।।
चाड़ी कीधी चौंतरे, कीधो थापणमोसो।
कुगुरु कुदेव कुधर्म नो, भलो आण्यो भरोसो।।१०।।
खटिक ने भवे मैं किया, जीव नाना विध घात।
चिड़ीमार ने भवे चिड़कला, मार्‌या दिन नें रात।।११।।
काजी मुल्ला ने भवे, पढ़ी मन्त्र कठोर।
जीव अनेक जबै किया, कीधा पाप अघोर।।१२।।
मच्छीमार ने भवे माछला, जाल्या जल वास।
धींवर भील कोली भवे, मृग पाड़्या पाश।।१३।।
कोटवाल ने भवे जे किया, आकरा कर दण्ड।
बन्दीवान मराविया, कोरड़ा छड़ी दण्ड।।१४।।
परमाधामी ने भवे, दीधा नारकी दुःख।
छेदन भेदन वेदना, ताड़न अति तिख।।१५।।
कुम्भार ने भवे मैं किया, नीमाह पचाव्या।
तेली भवे तिल पीलिया, पापे पिण्ड भराव्या।।१६।।
हाली भवे हल खेड़िया, फाड़्या पृथ्वी ना पेट।
सूड़ निनाण घणा किया, दीधी बलदाँ चपेट।।१७।।
मालीने भवे रोपिया, नाना विध वृक्ष।
मूल पत्र फल फूल ना, लागा पाप ते लक्ष।।१८।।
अद्धोवाइयाने भवे, भर्‌या अधिका भार।
पोठी पुठे कीड़ा पड़्या, दया नाणी लिगार।।१९।।

छींपाने भवे छेतर्या, कीधा रंगण पास।
अग्नि आरम्भ कीधा घणा, धातुर्वाद अभ्यास।।२०।।

सूरपणे रण झुंझता, मार्या माणस वृन्द।
मदिरा मांस माखण भख्या, खादा मूल ने कंद।।२१।।

खाण खणावी धातु नी, पाणी उलंच्या।
आरम्भ किया अति घणा, पोते पापज संच्या।।२२।।

करम अंगार किया बली, घरने दव दीधा।
सम खाधा वीतराग ना, कूड़ा कोलज कीधा।।२३।।

बिल्ली भवे उंदर लिया, गिरोली हत्यारी।
मूढ़ गंवार तणै भवे, मैं जुवाँ लीखाँ मारी।।२४।।

भडभुंजा तणे भवे, एकेन्द्री जीव।
जुवार चणा बहु सेकिया, पाडंता रींव।।२५।।

खांडण पीसण गारना, आरम्भ अनेक।
रांधण इंधण अग्निना, कीधा पाप अनेक।।२६।।

विकथा चार कीधी बली, सेव्या पांच प्रमाद।
इष्ट वियोग पाड़्या किया, रूदन ने विषवाद।।२७।।

साधु अने श्रावक तणा, व्रत लही ने भांग्या।
मूल अने उत्तर तणा, मुझ दूषण लाग्या।।२८।।

सांप बिच्छू सिंह चीतरा, सिकरा ने सामलि।
हिंसक-जीव तणे भवे, हिंसा कीधी सबली।।२९।।

सुआवड़ दुषण घणा, बली गरभ गलाव्या।
जीवाणी ढोल्या घणा, शीलव्रत भंगाव्या।।३०।।

रांगण पास मैं किया, जीव नहीं जाणी।
हिंसा कीधी जीवनी, दया न उर आणी।।३१।।

धोबी ने भवे धोविया, काढ़्या कपड़ा ना कीट।
अणगल नीर ढोल्या घणा, आई आँख्याँ मीट।।३२।।

कन्दोई ना भवे मैं किया, भट्टी बाली न जोय।
जीव आरम्भ किया घणा, लाग्या पातक मोय।।३३।।

वणिज किया वाणिया भवे, धड़ियाँ दीवी उड़ाय।
छैतरी (पतरे) वस्तु मारी घणी, पाप पूग्या आय।।३४।।

उनाले हल हांकिया, वर्षाले गाडा।
नीलण फूलण चाम्पी घणी, भूखाँ मारूया छै पाडा।।३५।।

गूजर ना भवे मैं किया, बांध्या पाप रा भारा।
पाडी ने बेलो छोड़ियो, पाडा ने पकडूया।।३६।।

खाती ना भवे मैं किया, घणा रूंख बाढूया।
थोड़ा ने बली घणा, मुझ दूषण लाग्या।।३७।।

हाथी ना भवे मैं किया, किया रुंखां रा खोगाल।
पंखियाँ रा माला पाड़िया, भाँजी तरुवर डाल।।३८।।

लोहार ना भवे मैं किया, घणा धवण धमाया।
कसी कुदाला पावड़ा, खड़ग कटारी कराव्या।।३६।।

ब्राह्मण ना भवे मैं किया, अणगल नीर स्नान।
ज्योतिष निमित्त भाखिया, लिया वर्जित दान।।४०।।

सती ने कुसती कही, कायर ने शूरा।
वेश्या ना दोय डीकरा, कह्या दोनूं पख पूरा।।४१।।

बजाज ना भवे मैं किया, जूना नया कर बेच्या।
कूड़ कपट केलव्या घणा, पोते पापज संच्या।।४२।।

सराफी ना भवे मैं किया, भेली करवा आथ।
गालणी घणी करावता, धन चाल्यो ना साथ।।४३।।

अणछाण्या आधण दिया, अण पूंजे चूले।
अणजोया धानज ऊरिया, मुझ पाप न भूले।।४४।।

मेला तमासा देखताँ, विषय नजर भर जोय।
कितोल हांसी नें मशकरी, करता नर कोय।।४५।।

जोर करी हींडै हींडता, तोड़ी तरुवर डाल।
काचा फल फूल चूँटिया, फोड़ी सरवर पाल।।४६।।
भोपा भरड़ा ने भवे, अणहुंता नचाया।
बकरी, भैंसा बापड़ा, दोसे मिस मराया।।४७।।
नावण धोवण मैं किया, बागा बेस बनाया।
आरीसे मुख जोइया, बहु दोष लगाया।।४८।।
सूल्या धान दलाविया, घणा घुण मसलाया।
ईली दुःखी अति घणी, पोते पाप कमाया।।४६।।
फड़िया ना भवे मैं किया, सूल्या धानज विणज्या।
लोभ तणे वश परिग्रह, कारज कोई न सिज्या।।५०।।
पढ़वारी रा काम में, घणा कर्मज बाँध्या।
घीचारी ने भोलाविया, क्षण साचा सांध्या।।५१।।
बेपार कीनो पसारी तणो, घणी औषधियां राखी।
जीवाँ रा नाश किया घणा, कीकर रेसी नांखी।।५२।।
गुड़ खाण्ड तेल घृत ना, विणज चौमासे कीना।
जीवहत्या लागी घणी, कर्म खोटा कीना।।५३।।
रंगरेजा ना भवे मैं किया, कसुम्बा रंग्या।
अणछाण्या पाणी ढोलिया, लाभ तणी संज्ञा।।५४।।
सोनी रा भवे मैं किया, सोना रूपा में भेल।
पूरो तोल रे वाणिया, धरत लोग्यो तेल।।५५।।
वाघरी ने घरे जद वस्या, सब जीव संहार।
रुधिर मांस भर्या रह्या, करता मांस आहार।।५६।।
दासी वेश्या ने कुले, चोरी जारी पाई।
साते व्यसन सेविया, कुबुद्धि कूड़ कमाई।।५७।।
दाई ना भव देखिया, आंवल मल असज्झाय।
झूंठ जाचक ने जिहाँ, राखिया सराय।।५८।।

काग चिड़ी कूकड़ कुले, कीटक भखिया कोड़।
मांखी जुवाँ गिगेड़ला, उदेई इण्डा फोड़।।५६।।
लखारा भवे लाख लेई, बड़ पीपल बाढ़ी।
पूरण प्राणी धोई ने, अगन चढ़ाई गाढ़ी।।६०।।
भील मेणा थोरी भवे, लगाया दव लायाँ।
भैंसा एवड़ बाढिया, डंभाई टोगर गायाँ।।६१।।
असुर तणै भव उपना, मुर्गा गाय मरावी।
पंखी पिंजर पाड़िया, कट गिलोल करावी।।६२।।
केई जुहर कराया, धोरी केई धरणा।
दुरबल लोक केई दुहव्या, करमां स्यूं कोई न डरणा।।६३।।
खेत बाग खेड़ाविया, होय हाकम हुजदार।
सरदह केई शोषाविया, भरिया पापाँ रा भार।।६४।।
कबाड़ी भवे कर्म मैं किया, केई कठोता कराया।
सालर गूलर बड़ काटिया, पापे पेट भराया।।६५।।
कलाल कुंजड़ा कुले, दारू भट्ट चढ़ाया।
भाजी केकरे कारणे, केई रोप रोपाया।।६६।।
भाठा सिलावट भांजिया, केई मन्दिर कराया।
माटी ईंटा कारणै, केई चाव लगाया।।६७।।
भैरूं भवानी मानिया, महा रुद्र हनुमान।
आठ मद छके करी, दीधा बलिदान।।६८।।
पंखी माला खोसिया, भंवरा घर ढाया।
सूल्या धान दलाविया, पापे पिण्ड भराया।।६६।।
निन्दा कीधी साधु की, सूधा साधु सताया।
कुगुरु संगे लाग ने, कर्म बहुला बंधाया।।७०।।
दान्तण ने ते कारणे, केई रूंख कटाया।
धोयण दाड़ी ने मीसे, केई गोठ कराया।।७१।।

काावड़ डुबड केतला, रावल रात रमाया।
बले हरषे पात्री योखने, केई चिरत कराया।।७२।।

रे रे कर्म किया कैसा, पाप कीधा अपार।
ये दोष उदय आविया, अबै कुण आधार।।७३।।

सिद्ध भगवन्त अरु साधु नो, हिवे शरणो होईज्यो।
भगवन्त नो भजन कीजिये, सुर स्हामो जोईज्यो।।७४।।

समदृष्टि जीव ते सरधसी, सुणताँ समता आवै।
भारी कर्मा जीवना, सुणताँ दुःख पावै।।७५।।

भव अनन्ता भमताँ थकाँ, कीधा देह सम्बन्ध।
त्रिविध-त्रिविध करी बोसरूं, तिण सूँ प्रतिबन्ध।।७६।।

भव अनन्त भमताँ थकां, कीधा कुटुम्ब सम्बन्ध।
त्रिविध त्रिविध करी बोसरूं, तिण सूं प्रतिबन्ध।।७८।।

इण परे इह भवे पर भवे कीधा पाप अक्षत्र।
त्रिविध-त्रिविध करी बोसरूं, करूं जन्म पवित्र।।७९।।

इण विधि ए आराधना, भावे करसे जेह।
समयसुन्दर कहे पाप थी, इह भव छूटसे तेह।।८०।।

राग वैराड़ी जे सुणे, यह त्रिजी ढाल।
समयसुन्दर कहे पाप थी, छूटे भव तत्काल।।८१।।

ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं।।

परमेष्ठी पंचक

पांचूं परमेष्ठी प्यारा*

जीवन धन सब कुछ म्हांरा, पांचूं परमेष्ठी प्यारा।
है असहायां रा स्हारा, पांचूं परमेष्ठी प्यारा।

१. सर्वोच्च अर्हता धारी,
अरहंत अमल अविकारी।
तीर्थंकर त्रिभुवन तारी,
प्रवही प्रवचन री धारा।।

२. है सिद्ध सिद्धपद-वासी,
अज अजरामर अविनाशी।
परमात्मा परम प्रकाशी,
काटी करमां री कारा।।

३. धरमाचारज धृतिधारी,
निष्कारण पर-उपकारी।
लाखां री नैय्या तारी,,
भगवान कहूं भगतां रा।।

४. है उपाध्याय अविकारी,
गणिपिटिका रा भंडारी।
श्रुतदाता संकट-हारी,
जिन शासन-गगन-सितारा।।

५. मुनिवर जग-ममता त्यागी,
समता री प्रतिमा सागी।
है पाप-भीरु वैरागी,
'तुलसी' मनमोहनगारा।।

---

* लय : मैं ढूंढ़ फिरी जग सारा

अर्हत्-पंचक

प्रभु! म्हारै मन-मन्दिर में पधारो,*
म्हारो स्वागत नाथ! सिकारो, प्रभू०
करूँ पूजन प्राण-पिया रो, प्रभू०

१. चिन्मय नै पाषाण बणाऊं, ओ परिचय जड़ता रो।
स्वयं अमल अविकार प्रभू तो, स्नान कराऊं क्यांरो?

२. फल फूलां री भेंट करूं के? जीवन अर्पण म्हारो।
अगर तगर, चन्दन के चरचूं? कण-कण सुरभित थांरो।।

३. नहीं ताल कंसाल बजाऊं, धूप न दीप उजारो।
केवल लयमय स्तवना गाऊं, ध्याऊं ध्यान गुणां रो।।

४. मन चंचल है और मलिन है, ओ है धीठ धुतारो।
सब कुछ है तब ही तो तेडूं, सकरुण दृष्टी निहारो।।

४. वीतराग हो, समदर्शी हो, समता-रस संचारो।
'तुलसी' तारण-तरण तीर्थपति, अपणो विरुद विचारो।।

* लय : आसावरी,

सिद्ध पंचक

देवो देवोजी डगर वर, सिद्धि नगर चढ़ ज्यावूं।*
थांरो पलक-पलक, मैं अपलक ध्यान लगावूं।।

१. किण मारग स्यूं श्री जिनवरजी! अपणै धाम सिधावो?
समदर्शी सर्वज्ञ परम-प्रभु, परमातम पद पावो।
दरसावो, मैं भी तिण पथ निजर टिकाऊं।।

२. अक्षय अरुज अनंत अचल अज, अव्याबाध कहावो,
क्यूं कर सहजानंद-समन्दर में विलीन हो ज्यावो?
बतलावो, मैं भी बो ही क्रम अपणावूं।।

* लय : आए आए जी बदरवा

३. निकट अनंत अलोक पड्यो, क्यूं लोकांते थिति ठावो?
पैंतालीस लाख जोजन में, सारा कियां समावो?
समझावो, मैं स्वयंमेव समझणो चावूं।।

४. एकर भी क्षण-भर भी साहिब! साक्षात्कार करावो,
तो मन चाह्या फलै मनोरथ, लाग्यो हृदय उम्हावो।
उमगावो, पर नहिं मन घबराट मचाऊं।।

५. अनुपमेय अज्ञेय सच्चिदानन्द दया दिखलावो,
साद्यनंत भगवंत हंत भक्तां नै क्यूं तरसावो?
सरसावो, 'तुलसी' सिद्ध स्तवन सुणाऊं।।

आचार्य पंचक

धरमारज! मुझ तारो,*
मैं लीन्हो शरण तुम्हारो।
है और न कोई चारो।।

१. भवसागर है अथग अमित जल, नहिं है निकट किनारो।
जबर-ज्वार रै झोला मांही, बीत्यो जाय जमारो।।

२. साश्रव आतम-नाव पुराणी, पल-पल जल पेसारो।
डगमग डगमग डोलै, थां बिण कुण है खेवणहारो।।

३. डगर-डगर में मगर भयंकर, पग-पग पर भय बांरो।
अै तूफान उठै हड़बड़कै, धड़कै दिल दुनिया रो।।

४. आय लगी अब बीच भंवर में, मन-मांझी मतवारो।
इण बिरियां में इण दरिया में, साहिब! शरणो थांरो।।

५. प्रतिनिधि आप प्रथम-पद का हो, आर न पार गुणां रो।
करुण पुकार सुणो सानुग्रह, 'तुलसी' पार उतारो।।

---

* लय : पानी में मीन पियासी

उपाध्याय पंचक

म्हारो अभिवादन स्वीकारो।*
उपाध्यायजी! द्यो जीकारो, म्हारो अभिवादन स्वीकारो।
स्वीकारो अस्वीकारो अभिवादन व्यर्थ न म्हारो।।

१. परमेष्ठी-पंचक में प्रभुवर! चोथो पद है थांरो।
नमो उवज्झायाणं रो जप, लागै प्यारो प्यारो।।

२. जिन शासन रो बड़ो महकमो, साहिब! आप संभारो।
घट-घट घाली ज्ञान-रोशनी, हर अज्ञान-अंधारो।।

३. आगम एक अखूट खजानो, ओ अध्यात्म कथा रो।
सदा भणावो शिष्य संघ नै, बांधी मधुर मथारो।।

४. श्रुत-उपासना संघ-शासना, रो सम्बन्ध सदा रो।
उपाध्याय आचारज जोड़ी, अविचल ज्यूं ध्रुव-तारो।।

५. पांचूं अंग नमत प्रभु-चरणां, निश्चित ही निस्तारो।
तिण में 'तुलसी' बणै सहारो, थांरो एक इशारो।।

* लय : नाथ! कैसे कर्म को फंद छुड़ायो

मुनि पंचक

दोनूं हाथ जोड़कर करुं, साधु रै चरणां में परणाम।*
चरणां में परणाम नाम सिर, करतां पाप पलावै।।
पावै अजरामर शिव-धाम।।

१. आत्म साधना करै निरन्तर, बो ही साध कहावै।
भावै विमल भाव अविराम।।

२. पांच महाव्रत करण-जोग जुत, आजीवन सुध पालै।
भालै शिवमग आठूं याम।।

* लय : असल दुपट्टो फूल....

३. निज जीवन-धन-गुरु अनुशासन, निशदिन शिर धर विचरै।
करणी करै सदा निष्काम।।

४. पर-उपकार परायण पल-पल, भल उपदेश सुणावै।
पावै प्रतिपल परमाराम।।

५. अप्रतिबन्धविहारी भारी, निज पर आतम तारै।
सारै 'तुलसी' वांछित काम।।

श्री पार्श्व जिन स्तवन

प्रभु पार्श्वदेव चरणों में शत शत प्रणाम हो।*
मेरे मानस के स्वामी, तुम एक धाम हो।। ध्रुव०।।

दुनिया में देव लाखों, पग-पग पुजा रहे-पग-पग०।
पर इस रसना में रोशन, इक तेरा नाम हो।।
प्रभु पार्श्वदेव चरणों में०।। १।।

तुम से न राग रति भर, नहिं द्वेष औरों से-नहिं०।
यह वीतरागता तेरी, मेरा विश्राम हो।।
प्रभु पार्श्वदेव चरणों में०।। २।।

कैसे बनूँ मैं उऋण, उपकार से अहो-उपकार०।
चरणों में चहे पन्हैया, यह मेरी चाम हो।।
प्रभु पार्श्वदेव चरणों में०।। ३।।

पाकर भी पार्श्व-मणि हम, हत् भाग्य जो रहे-हत्०।
अब सच्चा पार्श्व बनूँ मैं, बस ऐसा काम हो।।
प्रभु पार्श्वदेव चरणों में०।। ४।।

नस-नस में बस रहे हो, रस ज्यों कवित्व में-रस ज्यों०।
भगवान भक्त 'तुलसी' के, तुम ही एक राम हो।।
प्रभु पार्श्वदेव चरणों में०।। ५।।

---
* लय - अफसाना

श्री वीर प्रार्थना

महावीर प्रभु के चरणों में, श्रद्धा के कुसुम चढ़ायें हम।*
उनके आदर्शों को अपना, जीवन की ज्योति जगायें हम।। ध्रुव०।।

तप संयम मय शुभ साधन से, आराध्य-चरण आराधन से।
बन मुक्त विकारों से सहसा, अब आत्म-विजय कर पायें हम।।
महावीर प्रभु के चरणों में०।। १।।

दृढ़ निष्ठा नियम निभाने में, हो प्राण बली प्रण पाने में।
मजबूत मनोबल हो ऐसा, कायरता कभी न लायें हम।।
महावीर प्रभु के चरणों में०।। २।।

यश-लोलुपता, पद-लोलुपता, न सताये कभी विकार व्यथा।
निष्काम स्व-पर कल्याण काम, जीवन अर्पण कर पायें हम।।
महावीर प्रभु के चरणों में०।। ३।।

गुरुदेव शरण में लीन रहें, निर्भीक धर्म की बाट बहें।
अविचल दिल सत्य अहिंसा का, दुनिया को सुपथ दिखायें हम।।
महावीर प्रभु के चरणों में०।। ४।।

प्राणी-प्राणी सह मैत्रि सझें, ईर्ष्या मत्सर अभिमान तजें।
कहनी करनी इकसार बना, 'तुलसी' तेरा पथ पायें हम।।
महावीर प्रभु के चरणों में०।। ५।।

* लय - जिन धर्म का डंका भारत में०

प्रार्थना

दे दयालो देव! तेरी, शरण हम सब आ रहे।
शुद्ध मन से एक तेरा, ध्यान हम सब ध्या रहे।।ध्रुव०।।

मोह मद ममता के त्यागी, वीतरागी तुम प्रभो।
हम भी उस पथ के पथिक हों, भावना यही भा रहे।।१।।

सद्‌गुरु में हो हमारी, भक्ति सच्चे भाव से।
धर्म रग-रग में रमे, हरदम यही हम चाह रहे।।२।।

दिल से पापों के प्रति, प्रतिपल हमारी हो घृणा।
प्रेम हो सत्संग से यह, लालसा दिल ला रहे।।३।।

दूसरों की देख बढ़ती, हो न ईर्श्या लेश भी।
सर्वदा ग्राहक गुणों के, हों हृदय से गा रहे।।४।।

त्यागमय जीवन बितावें, शान्तिमय बर्ताव हो।
भाव हो समभाव तेरा-पन्थ जो हम पा रहे।।५।।

---

* लय - मन्त्र वन्देमातरम्

श्रद्धा-सुमन

श्री महावीर चरण में सादर श्रद्धा-सुमन सझाऊँ मैं।
हार्दिक भक्ति-सलिल से सींच-सींच कलियाँ विकसाऊँ मैं।। ध्रुव०।।

ईश्वर अखिलेश्वर, हाँ हाँ ईश्वर०
प्रभु परमातम परमेश्वर।
प्राण-प्रिय जैन जिनेश्वर।
भास्वर अविनश्वर कहि बतलाऊँ मैं।। श्री०।।१।।

नहिं जिन जग कर्ता, हाँ हाँ नहि०
नहिं शंकर वत् संहर्ता।
यद्यपि त्रिभुवन के भर्ता।
अविकार अमल जस लक्षण गाऊँ मैं।। श्री०।।२।।

नहिं घट-घट व्यापी, हाँ हाँ नहि०।
यद्यपि घट-घट के ज्ञापी।
प्रभु ज्ञान पतंग प्रतापी।
सब पाप काप सुमरत सुख पाऊँ मैं।। श्री०।।३।।

नहिं भगवन् भोगी, हाँ हाँ नहिं०
नहिं योगाराधक योगी।

---

* लय - देखो वीर जिनेश्वर वन्दन राय उदाई आवै रे

साकार इतर उपयोगी।
अवियोगि मिलन हित हृदय लुभाऊँ मैं।। श्री०।।४।।
अमृत रस वर्षी, हाँ हाँ अमृत०।
चुम्बक वत् चित्ताकर्षी।
उपदेश हि जस शिव दर्शी।
"तुलसी" नत मस्तक शीश चढ़ाऊँ मैं।। श्री०।।५।।

श्री पूज्य भीखणजी को समरण

दोहा

कोई अन्यमति इम कहै, भजन नहीं जन के मांय।
सूना घर को पाहुणो, ज्यूं आवै ज्यूं जाय।।१।।
खेत में खात रलाय नें, हल देवै जुतराय।
खेत खड़ै चौकस करै, रूड़ी बाड़ बणाय।।२।।
जल स्यूं सींचै खेत नें, बीज नहीं तिण मांय।
रुत आयाँ रोवै करसणी, लुणताँ देखै लोग लुगाय।।३।।
दान दया जप तप घणो, जैन धर्म के मांय।
बीज भजन बिना करसणी, करने सब खप अहली जाय।।४।।
केई केई भोला लोक नें, बांहगा दे बहकाय।
देवै दृष्टांत प्रश्न कूड़ा, रालै फंद के मांय।।५।।
जैन मति कोई जैन में, म्हांरी सुणो करसण करतूत।
बीज बाहवै शाख निपजायवा, शिवपुर अंगा सूत।।६।।
खेत धणी को जीव छै, काया खेत समान।
तप रूपीयो हल जोत नें, खात रूपीयो दान।।७।।
सागड़ी रूपीया सतगुरु, सम्यक्त्व बीजज बाय।
दया रूपीयो जल पांवता, व्रताँ री बाड़ बणाय।।८।।

खेत सीलु कर्म काटवा, क्षम्याँ रूपणी कसी ल्याय।
खाई बाड़ संतोष ज्यूं, पान पोट ज्यूं पुन्य बंधाय।।६।।

मेह अरिहंत ज्यूं ध्यान छै, ध्यान रूपीयो ज्ञान।
चारे रूप निपना सुख संसार ना, विविध विविध असमान।।१०।।

नाज रूपीया फल मुगत का, मोड़ा बेगा जास्याँ मोख।
जैन जिस्यो कसरण नहीं, म्हे घणा देख्या मत फोक।।११।।

थे नहीं समझो बोधबीज में, म्हे भजां अरिहंत भगवान।
थारा गुरु महिमा कही, मैं पिण लीधी जाण।।१२।।

गुरु गोविन्द दोनूं खड़ा, किस के लागूं पाय।
बलिहारी सत गुरु तणी, गोविन्द दिया ओलखाय।।१३।।

अरिहंत गुण नहीं ओलख्या, सतगुरु दिया दरशाय।
कहूं भजन महिमा सतगुरु तणी, ते सुणज्यो चित्त लगाय।।१४।।

ढाल

श्री संत भीखणजी रो समरण करताँ, भव दुःख जावै सर्व भाज जी।
बासो बसे तो देवलोकाँ मांहि, पामैं मुक्तपुरी नो राजजी।।
श्री पूज्य भीखणजी रो समरण कीजै।।१।।

भी कहताँ भिक्षु व्रत लीधा, ख कहताँ खिम्या-रस पीध जी।
न कहताँ सावद्य काम निवार्‌या, जी कहताँ इन्द्रयाँ ने जीतजी।।२।।

समरण चिन्तामणि च्यार आखर रो, तिण में गुण अथागजी।
चक्री निधान ज्यूं समरण साझै, तिण रो वीर कह्यो बड़ भागजी।।३।।

सूत्र सिद्धान्त में नवकार भाख्यो, दोय पदाँ में आया स्वामजी।
आचारज पदवी ने सतगुरु साधु, ज्याँरो रात दिवस रटो नामजी।।४।।

च्यार मंगलीक उत्तम शरणा लेणा, श्री वीर गया छै भाख जी।
तीन प्रकारे बोलै स्वामी, ज्याँरी आवसग्ग सूत्र में साखजी।।५।।

घणा विघन भागै इण समरण स्यूं, टलज्यावै दुख हुवै हगामजी।
कही कथा सूतर के माहीं, लेऊँ थोड़ासा नाम जी।।६।।
लाय में बलताँ सतगुरु समर्‍या, नहीं बल्यो कंजकंवारजी।
शिष्य होस्यूं श्री नेम जिणन्द रो, तिण नें देवता काढ्यो बाहरजी।।७।।
सेठ सुदर्शन में संकट पड़ियो, जब समर लिया जगनाथजी।
विघन टल्यो देखो अरजनमाली रा, नहीं चाल्या तिण पर हाथजी।।८।।
सीता सती नें अंजणा वे वन में, उपसर्ग उपना करूरजी।
संकट पड्‍याँ सती सतगुरु समर्‍या, तिण रो देव विघन कियो दूरजी।।६।।
सेठ सुदर्शण नें समरण करताँ, अभया दीनो आलजी।
शूली फाट सिंघासण रचियो, इसड़ो समरण शील रसालजी।।१०।।
सती सुभद्रा नें निज सासू, दियो अणहुंतो आलजी।
तेलो करि नें सती सतगुरु समर्‍या, देवी आई तत्‌काल जी।।११।।
राजुल रूप देखी रहनेमी चलिया, ध्यान चूका नें दिया ध्रिकार जी।
ध्यान समरण मन पाछो धरियो, पहुंता मुगत मझार जी।।१२।।
अरणक नें कामदेव दोयाँ नें, देवता दुख दीधा अपार जी।
तो पिण सद्‌गुरु समरण सैंठा, देव गया तिण स्यूं हारजी।।१३।।
नन्दन मणियारो डेडको हूँतो, तिणने चींथ्यो श्रेणिक रै केकाणजी।
संथारो करि नें सतगुरु समर्‍या, उपनो दुधर विमाणजी।।१४।।
दल मेल्या तिहाँ सात नरक ना, परसनचन्द राजान जी।
ध्यान समरण मन पाछो धरियो, पाम्या - केवलज्ञानजी।।१५।।
तीर्थंकर चक्रवर्त इंद्रादिक, ओ ही समरण साधजी।
मुक्ति पधार्‍या तेहिज भाष्यो, ओ ही मन्त्र आराधजी।।१६।।
मध्यम नर कोई समरण साझै, ज्यांरै बधज्यावै आबजी।
मध्यम जायगाँ प्यारी लागै, जाणै क्यारी खिली गुलाबजी।।१७।।
उत्तम मध्यम रो नहीं कोई कारणै, कुल ऊँच नीच नें मध्य जी।
समरण साधै तिणरै घट में, जाणै चांदणो कर दिया चन्द जी।।१८।।

जिम कोई जल नें पय ओटावै, तिम-तिम चोखो होवै दूध जी।
कर्म पातक झड़ै इण समरण स्यूं, निरमल चोखी ज्यांरी बुधजी।।१९।।

कपड़े को मैल कटै साबुन स्यूं, रत्न काम्बल रो आगजी।
कर्मां रो मैल छूटे समरण स्यूं, मिट ज्यावै भव भव दागजी।।२०।।

सुलभ बोधी समरण साधै, अठै ही पामैं ज्ञान जी।
अठै नहीं पामैं तो परभव में पामैं, इसड़ो समरण ध्यानजी।।२१।।

समरण करताँ जाणै मुख में, मिश्री पीधी गालजी।
शरीर वैदनाँ ध्यान समरण स्यूं, जाणै बैठा सुखपालजी।।२२।।

पूज्य सरीषी भरत खेतर में, बीजी नहीं कोई चीजजी।
समरण व्रताँ में समकित आपै, हलुकमी रह्या रीझजी।।२३।।

साध भीखणजी रो समरण करताँ, पहुँचै भवजल पारजी।
जे नर नारी रा भाग्य बड़ा छै, बंदै सूरत दिदार जी।।२४।।

परजा नें प्यारा वासुदेव केशव, वीर बाहला तीर्थ च्यारजी।
पतिव्रता विकसै पति देख्याँ, ज्यूं समदृष्टि गुरु दिदारजी।।२५।।

अलव रो जीव फूल डम्बर में, सारंग ने सारंग करै कूकजी।
ज्यूं समदृष्टि नें गुरु दर्शन की, सदा लागी रहै भूख जी।।२६।।

अमृतफल सुवटा नें मीठा, मोती मीठा मरालजी।
समदृष्टि सतगुरु समरण स्यूं, कीधां हि हर्ष अपार जी।।२७।।

अमृत भोजन कीधाँ तिरपत, पछै किसी कुकस री लगनजी।
समदृष्टि सतगुरु समरण स्यूं, मुनि ज्यूं रहै मगनजी।।२८।।

मनबांछित फलै इण समरण स्यूं, समरो भीखणजी साधजी।
हालत चालत ऊठत बैठत, चित में रहो आराधजी।।२९।।

बेल त्रिया कोई निरफल थावै, निरफल थावै कोई बीजजी।
सतगुरु समरण निरफल नाहीं, ज्यूं सीता सती रो धीजजी।।३०।।

मध्यम बेल्याँ मंत्र जपंताँ, तिण स्यूंई सुधरै काजजी।
साधु उत्तम को समरण करूयाँ स्यूं, निश्चेई शिवपुर राजजी।।३१।।

काल दुःखम में बहोलकर्मी, आय लियो अवतारजी।
सतगुरु समरण स्यूं केवल पामैं, अटके दोय प्रकारजी।।३२।।
काल सुखम में हलुकर्मी, आय लियो अवतारजी।
सतगुरु समरण स्यूं केवल पामैं, इसा भिक्षु अणगारजी।।३३।।
अध्येन आठ में गिनाता सूतर में, गुरु गुण गावै दिन रातजी।
गीत तीर्थंकर तेहिज बांधै, केवल पिण उपजै साख्यातजी।।३४।।
ऊंच पदवी देव मानव गत में, आद तीर्थंकर देवजी।
सर्व सुख पामैं, इण समरण स्यूं, सारो भीखणजी री सेवजी।।३५।।
इण समरण स्यूं कटै भव भव रा, कर्म कटकदल फौजजी।
देखो सांवलिये मुनिराज री सूरत, पूरो मन री मौज जी।।३६।।
पाखण्ड पेलणहारा नें बिडदाँ रा भारा, बर्ण साँवल दीर्घ दीदारजी।
लाली लोचन चाल हस्ती नी, पूज्य ओलखो इण उणिहारजी।।३७।।
पंच महाव्रत पालै दोषण टालै, शूरवीर नें धीरजी।
मूल गुण आचारज पूरा, आगै हुवा ज्यूं महावीरजी।।३८।।
वीर स्मरण में पूज्य समरण में, फेर नहीं तिल मातजी।
वीर री गादी श्रीपूज्य विराज्या, सगली चौथे आरे री ज्यूं बातजी।।३६।।
तीर्थ प्रवर्ताव्या ज्ञान रा गाढ़ा, हीरा रत्नाँ री खाणजी।
भरत क्षेत्र में सोध्या नहीं लाधै, भिक्षु सरीषा बुद्धिवानजी।।४०।।
हुवा नें बले होसी घणेरा, हिवडाँ तो दीसै नांयजी।
गुण घणा पिण एक जीभ स्यूं, कह्या कठा लग जायजी।।४१।।
तीर्थ प्रतिपाला नें ज्ञान रसाला, भविकाँ भंजन भीरजी।
अमृतवाणी जग में बखाणी, मीठी मिश्री खीर जी।।४२।।
खीर खाई चक्रवर्ती नी दासी, रत्न करै चकचूरजी।
खीर ज्यूं समरण समदृष्टि नें, बल ज्यूं बढ़ै पौरस पूरजी।।४३।।
गाल दियो गर्व श्रीदेवी नो, बल देख्यो तिण बारजी।
पौरस सम समदृष्टि धर्म दियो, अन्यमति नो गर्व गालजी।।४४।।

खीर खाई एक ब्राह्मण बांगै, बधियो विषय विकारजी।
खीर ज्यूं कूजन ब्राह्मण रो साथी, कुत्ता ज्यूं कूढत गिंवारजी।।४५।।
सुवो मैना पढ़ावै मानव गत में, वाणी बोलै विविध प्रकारजी।
साक्षात मैना नें कहै समरण कीजै, समझै नहीं मूढ़ गिंवार जी।।४६।।
रात दिवस त्यांरो ध्यान लग रह्यो, अन्यमत रो भजन विशेषजी।
निरफल जाणै कोई सत्य समरण नें, गाढ़ी राखै टेकजी।।४७।।
दृढ़पणो राखो भवी जीवाँ, राखो समरण टेकजी।
रखे समरण स्यूं ढीला पड़ ज्यावो तो, अन्यमति करसी थांरी ठेकजी।।४८।।
भगवंत भजाँ अरिहन्त सिद्ध प्रभु, आचार्य उवज्झाय मुनिरायजी।
पांचपदाँ रो समरण साझाँ, थानें तो पिण खबर न कांयजी।।४६।।
च्यार पदाँ रो चौबुरजगढ़, सतगुरु पोल दुवारजी।
पोल पायाँ बिन गढ़ किम पामैं, ज्यूं हम गुराँ को इधकारजी।।५०।।
गुरु स्तुति सुणो भवी जीवाँ, धारो समरण शील रसालजी।
तिर्‌या अनंता इण समरण स्यूं, दाख्या दीन दयालजी।।५१।।
एहवी महिमा गुरु समरण री, देवाँ री जाणो विशेषजी।
जैन में भजन नहीं इम मत कहिज्यो, छोड़ द्यो कूड़ी टेकजी।।५२।।
अन्य मताँ रो जैन धर्म रो, नहीं भजन परमाणजी।
बानगी दिखाली एक जैन धर्म री, अहो भजन पिछाणजी।।५३।।
रहि रहि पाखंडी इण जैन धर्म में, मुगते पहुँता अनन्त अनेकजी।
गुरुदेवाँ रै समरण बिना, मुगत न पहुँतो एकजी।।५४।।
मृगतृष्णा ज्यूं समरण थारो, कण बिना थोथो बावै नाजजी।
गुण बिना नांव स्यूं मुगत न पामैं, ज्यांरा कदेई न सुधरै काजजी।।५५।।
गुधू नें दिवस नहीं सूझै, पांव रोगी ने मीठी लागै खाजजी।
नीम पान नहीं कड़वो जहर चढ्या नें, गुण बिना भजन कर्म वश गाजजी।।५६।।
भगत भीखणजी रो श्रावक शोभो, कीधी च्यार तीरथ मनवारजी।
माला मोत्यां ज्यूं सतगुरु समरण, हीरा ज्यूं हिरदै धारजी।।५७।।

कुगत मिटावो सुगत जावो, समरो भीखणजी साधजी।
श्रावक शोभो कार्ति भाखै, श्रीजीद्वार सुगामजी।।श्रीपूज्य०।।५८।।

भोर समय भजूँ भिक्षु गणी

(लय - ऐसो जदुपति-२)

स्यूं समरूं गुरु भिक्खन नाम, वा समरूं गुरु भिक्खन काम।
वा गुरु भिक्खन की करणी, भोर समय भजूं भिक्षु गणी।।
रटूं भिक्षु गणी, समरूं भिक्षु गणी, भिक्षु गणी म्हारै मुकुट मणी।
रटूं भिक्षु गणी, भिक्षु गणी तेरापन्थ धणी।। ए आंकड़ी।। १।।

भिक्खन नाम बड़ो अभिराम, भिक्खन नाम हृदय विश्राम।
सरल शुभंकर शिव शरणी।। भो०।। २।।

नाम करूं क्षण आत्माराम, वर्णवस्यूं गुरुवर कृत काम।
ठाम स्थित सुणो सयल गुणी।। ३।।

धुर नृप नम्र नो काम उदग्र, साचूं श्रावक वर्ग समग्र।
दिल अव्यग्र यथा धरणी।। ४।।

दोय बरस चरचा गुरु पास, नहिं निज अरचा नी अभिलाष।
है स्याबास बल्लुज भणी।। ५।।

प्रतिभा नो अप्रतिम उजास, आत्म अलौकिकता आभास।
विश्व विकास यथा द्युमणी।। ६।।

सरधा नो रे अजोड़ निचोड़, नहिं कोई रंच रह्यो झकझोड़।
सहु नें ही पड़े स्वीकरणी।। ७।।

शासन मन्दिर नी रे दिवाल, निज आशय सम करिय विशाल।
ऊंडी नींव अतीव घणी।। ८।।

वर मरयाद लोह मय बीम, ढाल ढाल-मय ढोला धड़ीम।
मति संकलना कलिय बणी।। ९।।

चित्र विचित्र भांति दृष्टान्त, गुरु रज्जा सुख सज्जा शान्त।
शयन करै सुख मुनि श्रमणी।। १०।।

सारो जगत थयो इक ओर, एक प्रभु कियो काम कठोर।
ओर इसो न जण्यो जणणी।। ११।।
करणी करणी पड़सी याद, दीपांगज नी धरी आल्हाद।
धुर धारी देह उद्धरणी।। १२।।
तारण आतम तपस्या ताप, प्रारम्भी भूतल आताप।
बतका किम जाये वरणी।। १३।।
पुनरपि प्रेरित जन समझास, प्रारम्भी कियो प्रबल प्रयास।
सारी सारी निशि जागरणी।। १४।।
अन्न पान नों स्यूं रे प्रमाण, सांसै में रहता निज प्राण।
संगे नहिं बहु सिह शिष्यणी।। १५।।
सावय सावया नो समुवाय, अवलोकंता आगम मांय।
सी रीते करी समझावणी।। १६।।
वय सत सप्तति वर्ष नी पाम, नहिं ठहरे कहीं एकण ग्राम।
विहरवुं नित जिम नभ तरणी।। १७।।
यावज्जीव लियो संथार, ते मांहें कियो अद्भुतकार।
कौतुक सुणी गुरु बागरणी।। १८।।
जिन मत नों रे जमायो झण्ड, मेट्यो पाखण्ड नों अफण्ड।
भवदधि तारण तूं तरणी।। १६।।
साठै भाद्रव सित शुभ पाम, तेरस तिथि साध्यो सुरधाम।
चरमोत्सव तिथि तेह तणी।। २०।।
पटधर भारमल्ल ऋषिराय, जय मघ माणक डाल सुहाय।
कालू मूरति मन हरणी।। २१।।
उगणीसै अठाणव साल, राजाणै पावस नो काल।
चिहुं तीरथ नी चोकी चीणी।। २२।।
तीस मुनि श्रमणी पच्चास, तन मन मानै परम हुलास।
चूकै नहीं गुरु आणा अणी।।२३।।

श्री भिक्षु स्मृति

(लय - आरती नी)

अयि जय भिखो दैपेय।

तेरापन्थ पथाधिप, तेरापंथ पथाधिप,
जैन जगत आधेय। अयि जय भिखो दैपेय। (ध्रुव पद)

एकानन लख कानन, पंचानन लाजै। अयि पंचा०।
हंसासन वृषभासन, तव उपमा साझै।। अयि०।।१।।

नर बंको मरुधर नो, कवि कलना चीन्ही, अयि०कवि०।
कण्टालिय पुर अवतर, चरितारथ कीन्ही। अयि०।।२।।

विरस विषय रस त्यागी, त्यागी चित्र न एह, अ० त्या०।
दुनियाँ सतपथ लागी, अद्‌भुत हम हृदयेह। अयि०।।३।।

नहिं केवल मनपर्यव, अवधि स्यादन्ते। अ० अ०।
तदपि अलौकिक अनुपम, पन्थ लह्यो भन्ते। अयि०।।४।।

अलग अलग शिव जग मग, सुन कोई चित्त चिड़के। अ० सु०।
चित्र न चंग मृदंगे, महिषि सदा भिड़के। अयि०।।५।।

महावीर शासन में, दक्षिण इण भरते। अ० द०।
तव कृपया कलियुग में, सतयुग सो बरते। अयि०।।६।।

है तव अटल आण में, तीरथ च्यार खरे। अ० ती०।
छापुर चारुवास विच, 'तुलसी' तुम सुमरे।
अयि जय भिखो दैपेय।।७।।